

## आधुनिक युवाओं के लिये बुद्ध की प्रासंगिकता

### प्रलम्बिस के लिये:

धर्म चक्र प्रवर्तन दविस, **भगवान बुद्ध**, महाबोधिमंदिर, **चार आर्य सत्य**, आर्य आष्टांगिक पथ, चार उत्कृष्ट अवस्थाएँ

### मेन्स के लिये:

भगवान बुद्ध की प्रमुख शक्तिषाएँ, आधुनिक युवाओं के लिये बुद्ध की प्रासंगिकता

## चर्चा में क्यों?

भारत के राष्ट्रपति ने धर्म चक्र प्रवर्तन दविस (3 जुलाई) के अवसर पर युवाओं से भगवान बुद्ध की शक्तिषाओं से सीखने, खुद को समृद्ध बनाने और एक शांतपूरण समाज, राष्ट्र तथा वशिव के नरिमाण में योगदान देने का आहवान कथिा ।

- राष्ट्रपति ने यह स्मरण कराया कि आषाढ पूरणमि पर ही भगवान बुद्ध ने अपने पहले उपदेश के माध्यम से धम्म के मध्य मार्ग की शुरुआत की थी ।

## भगवान बुद्ध:

### परचिय:

- भगवान बुद्ध (सदिधारथ गौतम) का जन्म दक्षिणी नेपाल के तराई मैदानी क्षेत्र में स्थिति लुम्बिनी में शाक्य वंश के शाही परिवार में हुआ था ।
- 29 वर्ष की आयु में उन्होंने घर त्याग दिया और अपने शाही जीवन को अस्वीकार करते हुए तपस्या, आत्म-अनुशासन की जीवनशैली को अपना लिया ।
- लगातार 49 दिनों की ध्यान-साधना के बाद गौतम को बहिर के बोधगया में एक पीपल के पेड़ के नीचे बोधि (ज्ञान) की प्राप्ति हुई ।
- बुद्ध ने उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास सारनाथ में आषाढ पूरणमि के दिन अपना पहला उपदेश दिया था । इस घटना को धर्म चक्र प्रवर्तन (टर्नगि द व्हील्स ऑफ लॉ) के रूप में जाना जाता है ।
  - इस दिन को बौद्धों और हिंदुओं दोनों द्वारा अपने गुरुओं के सम्मान में गुरु पूरणमि के रूप में मनाया जाता है ।

# गौतम बुद्ध

इन्हें भगवान विष्णु के 10 अवतारों ( दशावतार ) में से 8वाँ अवतार माना जाता है

## जन्म

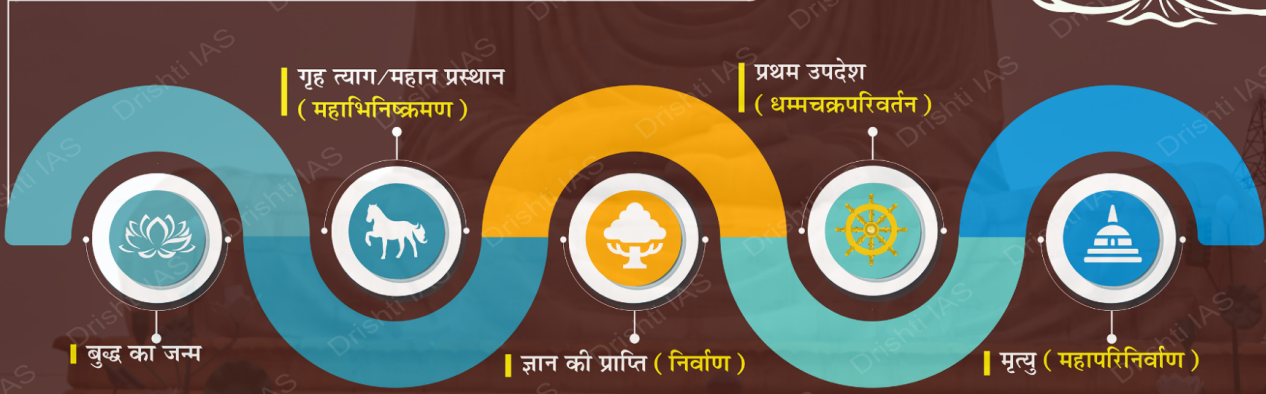
- सिद्धार्थ के रूप में जन्म ( 563 ईसा पूर्व )
- जन्मस्थान- लुम्बिनी ( नेपाल )  
कपिलवस्तु के निकट

## माता-पिता

- पिता- कपिलवस्तु के निर्वाचित शासक;  
शाक्य गणसंघ के मुखिया
- माता - कोशल वंश की राजकुमारी



## महत्त्वपूर्ण घटनाएँ



बुद्ध ने स्वयं को तथागत ( वह जो जैसा आया था, वैसा ही चला गया ) के रूप में संदर्भित किया और बौद्ध ग्रंथों में इन्हें भागवत के रूप में संबोधित किया गया है।

## समकालीन व्यक्ति

- वर्धमान महावीर
- बिम्बिसार
- अजातशत्रु

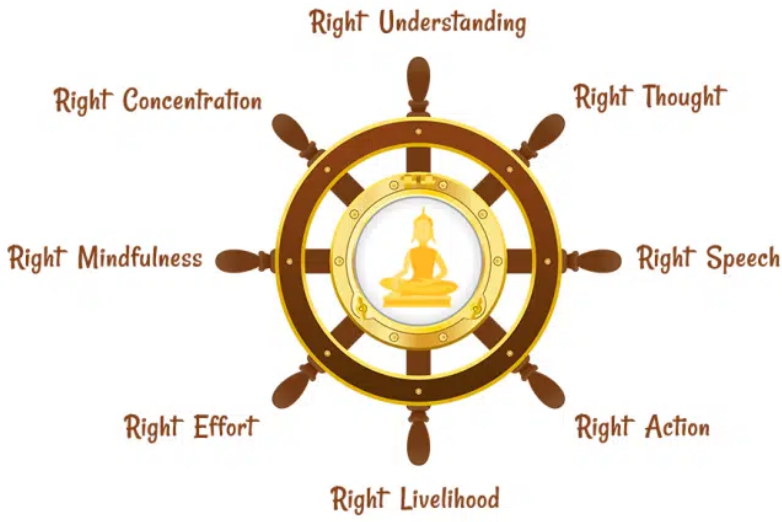
## बुद्ध से जुड़े अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

- बोधगया ( ज्ञान प्राप्ति ) ( ज्ञान प्राप्ति के बाद वे बुद्ध के नाम से जाने गए )
- सारनाथ ( प्रथम उपदेश )
- वैशाली ( अंतिम उपदेश )
- कुशीनगर ( मृत्यु ( 487 ई.पू. ) का स्थान )

## भगवान बुद्ध की प्रमुख शक्तिषाँ:

- **असूतविव के तीन चहिन:** ये सभी घटनाओं की वशिषताएँ हैं जनिहें हर कसिी को समझना और सूवीकार करना चाहयि । ये हैं-अनतियता (अनचिच), असंतोषजनकता (दुक्खा) और गैर-आतम (अनतता) ।
- **चार आर्य सतय:** ये दुख, दुख समुदय, दुख नरिोध और दुख नरिोध मारग के वशिषय में हैं । दुख का कारण अज्जान, राग एवं दूवेष है ।
  - आर्य आषट्गकि मारग का अनुसरण करके दुखों का नविवरण संभव है:

## THE NOBLE EIGHTFOLD PATH



### The Division of Wisdom

- 1.) Right Understanding
- 2.) Right Thought

### The Division of Ethical Conduct

- 3.) Right Speech
- 4.) Right Action
- 5.) Right Livelihood

### The Division of Mental Discipline

- 6.) Right Effort
- 7.) Right Mindfulness
- 8.) Right Concentration

- **चार उदात्त अवसूथाएँ:** ये सकारातमक मानसकि गुण हैं जनिहें व्यक्तको वकिसति करना चाहयि तथा सभी प्राणयिों में प्रसारति करना चाहयि । ये हैं- प्रेम-कृपा (मेट्टा), करुणा (करुणा), सहानुभूतपूरण आनंद (मुदति) और समभाव (उपेक्खा) ।
  - इन अवसूथाओं को वकिसति करके व्यक्त सद्भाव, सहानुभूत, परोपकारति तथा शांतको बढ़ावा दे सकता है ।
- **पाँच उपदेश:** ये बुनयिदी नैतकि सदिधांत हैं जो बुद्ध ने अपने सामान्य अनुयाययिों के लयि नरिधारति कयि थे ।
  - ये हैं- हत्या, चोरी करना, यौन दुराचार, झूठ बोलना और नशा करने से बचना ।
  - ये स्वयं एवं दूसरों को नुकसान पहुँचाने से बचने, जीवन और संपत्ति का सम्मान करने, पवतिरता एवं ईमानदारी बनाए रखने तथा स्पष्टता और जागरूकता बनाए रखने में सहायता करते हैं ।

## युवा जीवन की चुनौतयिाँ और बुद्ध के प्रेरक प्रसंग:

- **मूल आधार के रूप में सचेतन (Mindfulness):** बुद्ध की शक्तिषाँ के केंद्रीय सदिधांतों में से एक है सचेतन का अभ्यास ।
  - सचेतन व्यक्तयिों को वर्तमान क्षण के वशिषय में गहरी जागरूकता पैदा करने, उनके वचिरों, भावनाओं और कार्यों की बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लयि प्रोत्साहति करता है ।
  - युवा लोग वकिर्षणों से भरे वशिषय में पूरण रूप से उपसूथति और सलग्न रहने की बुद्ध की अवधारण से प्रेरति हो सकते हैं ।
  - सचेतन का अभ्यास करके युवा तनाव को प्रबंधति करना सीख सकते हैं, ध्यान एवं एकाग्रता में सुधार कर सकते हैं और आत्म-जागरूकता की भावना का पोषण कर सकते हैं, जसिसे मानसकि कल्याण तथा व्यक्तगित वकिस में सुधार हो सकता है ।
- **नश्वरता और अनासकति:** बुद्ध की शक्तिषाँ सभी घटनाओं की नश्वरता (केवल एक सीमति अवधतिक बने रहने की सूथति) और

लगाव की नरिस्थकता पर ज़ोर देती हैं।

- तात्कालिक संतुष्टिसे प्रेरति भौतिकवादी समाज में युवा इस समझ के साथ सांत्वना और प्रेरणा पा सकते हैं कसिब कुछ क्षणकि है।
- आनंद एवं पीड़ा दोनों की नश्वरता को पहचानकर युवा व्यक्तिएक ऐसी मानसकिता वकिसति कर सकते हैं जो अनुकूलनीय, लचीली और परविरतनशील हो।
- परणामों, संपत्तियों और यहाँ तक करिशितों के परतलगाव का त्याग काना युवाओं को अनावश्यक पीड़ा से मुक्त कर सकता है तथा उन्हें अधिक शांति के साथ जीवन को अपनाने की अनुमतिदे सकता है।
- करुणा और सहानुभूति: समकालीन वशिव में जहाँ वभिजन और संघर्ष जारी है, युवा प्रेम-कृपा तथा करुणा पर आधारति बुद्ध की शकिषाओं से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।
  - युवा सहानुभूतिका वकिस करके तथा दूसरों के संघर्षों से गहरी समझ वकिसति कर एकता एवं संपर्क की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं।
- आत्म-खोज और आतरकि परविरतन: युवा, जो सामन्यतः पहचान और उद्देश्य के प्रश्नों से जूझते रहते हैं, आत्म-अन्वेषण पर बुद्ध की शकिषाओं से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं।
  - आत्म-नरीक्षण और आत्म-चतिन में संलग्न होकर युवा अपने वास्तवकि स्वभाव, जुनून के साथ आकांक्षाओं में अंतरदृष्टिप्राप्त कर सकते हैं।
- सामाजकि और पर्यावरणीय ज़मिमेदारी में संलग्न होना: बुद्ध की शकिषाएँ सभी प्राणियों के परस्पर संपर्क पर बल देती हैं, साथ ही एक ज़मिमेदार कार्रवाई की वकालत करती हैं।
  - युवा समानता, न्याय और टकिारु प्रथाओं की दशिा में कार्य करके सामाजकि एवं पर्यावरणीय ज़मिमेदारी में सकरयि रूप से शामिल हो सकते हैं।
  - वे सामुदायकि पहलों में भाग ले सकते हैं, साथ हीहाशएि पर खड़े समूहों की वकालत कर सकते हैं और पर्यावरण संरक्षण में अग्रणी बन सकते हैं।
  - इन शकिषाओं को मूरतरूप देकर वे एक अधिकि न्यायसंगत, सामंजस्यपूरण और पर्यावरण के परतजिागरूक समाज के नरिमाण में योगदान देते हैं

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**??????????:**

प्रश्न. भारत के धार्मकि इतहिास के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2020)

1. सथावरिवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।
2. लोकोत्तरवादी संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघकि संप्रदाय की एक शाखा थी।
3. महासंधकिों द्वारा बुद्ध के देवत्वारोपण ने महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहति कयि।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (B)

प्रश्न. भारत की धार्मकि प्रथाओं के संदर्भ में "स्थानकवासी" संप्रदाय का संबंध कसिसे है?(2018)

- (a) बौद्ध मत
- (b) जैन मत
- (c) वैष्णव मत
- (d) शैव मत

उत्तर: (B)

प्रश्न. भारत के धार्मकि इतहिास के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2016)

1. बोधसित्व, बौद्ध मत के हीनयान संप्रदाय की केंद्रीय संकल्पना है।
2. बोधसित्व अपने प्रबोध के मार्ग पर बढ़ता हुआ करुणामय है।
3. बोधसित्व समस्त सचेतन प्राणियों को उनके प्रबोध के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लयि स्वयं की नरिवाण प्राप्तविलिंबति करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 2
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (B)

??????:

प्रश्न. भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास में पाल काल अति महत्त्वपूर्ण चरण है। विश्लेषण कीजिये। (2020)

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/buddha-s-relevance-to-the-modern-youth>

